ऑन लाइन पाठ्य सामग्री

वर्ग - स्नातक प्रथम वर्ष (प्रतिष्ठा)

सत्र — 2019 – 22

पत्र — प्रथम

विषय — प्रमुख नाथ कवियों का परिचय

प्रमुख नाथ कवि (भाग - 3)

3. चौरंगीनाथ :—

चौरंगीनाथ नाथ संप्रदाय के एक प्रमुख साधक हैं। विभिन्न संदर्भों से यह बात प्रमाणित हो चुकी है नाथ संप्रदाय में इनका स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण था। तिब्बती परंपरा के अनुसार वे गोरखनाथ के गुरुभाई थे। इनके नाम से उपलब्ध रचनाओं में भी इसी धारणा की स्वीकृति मिलती है। चौरंगीनाथ लिखित 'प्राण संकली' ग्रंथ एक संदिग्ध प्रामाणिक रचना है। इसके अनुसार वे राजा सालवाहन के पुत्र, मच्छन्दरनाथ के शिष्य और गोरखनाथ के गुरुभाई थे।

"सत्य बदन्त चौरंगीनाथ, आदि अंतरि सुनौ ब्रतांत
सालवाहन घरे हमारा जनमउतपति, सति माता मांछुर कहिला।"

एक किंवदंती के अनुसार विमाता ने इन्हें पंगु बना दिया था। मत्स्येन्द्र नाथ की कृपा दृष्टि प्राप्त कर इन्हें नवजीवन प्राप्त हुआ। लोक प्रचलित धारणा के अनुसार चौरंगीनाथ के पिता बंगप्रदेश के पाल राजा, देवपाल के कनिष्ठ पुत्र थे। पंजाब में प्रचलित

विभिन्न कहानियों के आधार पर चौरंगीनाथ पूर्ण भगत का ही दूसरा नाम था। तिब्बती परंपरानुसार इनका समय नवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध ठहरता है।

4. चर्पटनाथ :—

चर्पट या चर्पटीनाथ गुरु गोरखनाथ के शिष्य थे। ये रसेश्वर सिद्ध के रूप में प्रसिद्ध हैं; तिब्बती परंपरा में इन्हें मीनपा का शिष्य बताया गया है। इनका उल्लेख सिद्धों की परंपरा में भी मिलता है। ये मूलत: रसायनी साधक थे पर आगे चलकर गोरखनाथ के प्रभाव के कारण नाथ-संप्रदाय में दीक्षित हो गए। वे रसायन-सिद्धि की खोज में थे और बाह्य प्रक्रियाओं को नहीं मानते थे।

5. नागार्जुन :—

नाथ पंथ के नागार्जुन सिद्ध संप्रदाय के नागार्जुन से भिन्न हैं। इसे साबित करने के लिए उचित प्रमाण का अभाव है। साधनामाला के अनुसार ये शवरपाद और लुइपा के समकालीन थे। प्रबन्धचिंतामणि के अनुसार ये पादलिप्तसूरि के शिष्य थे। नागनाथ नामक किसी नाथसाधक की चर्चा 11वीं शताब्दी में मिलती है, वही आगे चलकर नागार्जुन के नाम से प्रसिद्ध हुए।

नागार्जुन या नाग अरजन्द का संबंध रसेश्वर संप्रदाय से भी था। गोरखपंथ की पारसनाथी जैन शाखा के ये प्रवर्तक आचार्य भी थे।

6. कुमारी :—

ये नागनाथ के शिष्य माने गये हैं। विभिन्न परंपराओं में ~~सबका~~ इनके नाम का उल्लेख मिलता है, किन्तु इतना निश्चित है कि नाथपंथ की वाममार्गी शाखा के ये प्रवर्तक थे। नाथ साधना में वाममार्गीय साधना के कतिपय तत्वों के योग से इन्होंने एक नया पंथ खड़ा किया था। इनकी शिष्या का नाम मेखला है कि जिसने इनकी रचनाओं की 'मेखला' नाम से ~~टीका~~ संस्कृत में 'टीका' भी लिखी है।

इनके अतिरिक्त गोपीचंद, भरथरी, चौड़ा चौली, अजयपाल, गंभीरनाथ आदि अनेक ~~सिद्ध~~ नाथ सिद्ध हुए हैं। किंतु इन सभी में गोरखनाथ का व्यक्तित्व एवं महत्व सर्वोपरि है। उनके व्यक्तित्व से नाथ संप्रदाय के मूल दर्शन को आसानी से समझा जा सकता है।

डॉ० मेनका कुमारी
सहायक प्राध्यापक (अतिथि), हिन्दी
एल० पी० एस० एम० कॉलेज, करीमी
ललित नारायण मिथिला विश्व०, दरभंगा।